ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

गुजरात की बौद्ध गुफ़ाओं की झाँकी

डॉ. हेतल जी. चौहाण

सूरत, गुजरात

यवन धर्मरक्षित ने जूनागढ़ में रहकर राज्य की सहायता से बौद्ध धर्म का प्रचार-प्रसार किया था। धर्म रक्षित ने सौराष्ट्र में 37000 लोगों को बौद्ध धर्मी बनाए थे । लेकिन वैदिक धर्म के आक्रमण का सामना बौद्ध धर्मकर सका नहीं । ई.स. 975 के पश्यात गुजरात से बौद्ध धर्म धीरे-धीरे लुप्त होता गया। पिछले 1100 वर्ष के दीर्घ विराम बाद लोगों की इच्छा से बौद्ध धर्म का पुन: आगमन हो रहा है । पिछली कुछ सदियों में बौद्ध धर्म का उदय तेज़ी से होता हुआ दिखाई दे रहा है। सदियों के विराम के बाद भी बौद्ध धर्म की अमिट छाप आज भी चमक रही है।

कच्छ कोटेश्वर की बौद्ध गुफ़ाएँ

चीनी प्रवासी ह्यु-एन-त्सांग ने इस गुफ़ा की मुलाक़ात सातवीं शताब्दी में ली थी । मंदिर के पीछे के हिस्से में आज भी गुफ़ाएँ हैं। अधिकतर गुफ़ाओं में परिवर्तन कर मंदिर बना दिए गए हैं। परंतु भीतर रही मूर्तियाँ बौद्धकालीन हैं। एक मूर्ति भगवान बुद्ध की हैं। मंदिर की छत की नक्काशी बौद्ध शैली की होने की प्रतीति कराती हैं । चीनी यात्री ह्यु-एन-त्सांग के कथन मुताबिक़ उस समय कोटेश्वर में 5000 जितने बौद्ध भिक्षु रहते थे। 80 जितने बुद्ध मठ थे।

नाडापानी (कच्छ) बौद्ध गुफ़ाएँ

भुज से 33 किमी. दूर नाडापानी की गुफ़ाएँ हैं । नाडापा भगवान बुद्ध के शिष्य थे। ऐसा कहा जाता है कि इस भिक्षु के नाम से गाँव का नाम नाडापा पड़ा है । यह गुफ़ा भुरीगढ़ की पहाड़ी में है । गुफ़ा के प्रवेशद्वार के ऊपर के भाग पर ब्राह्मी लिपि से लिखावट है। ये गुफ़ाएँ दूसरी सदी की होने के अनुमान हैं । यहाँ भुरीगढ़ के सामने कारीगढ़ की छोटी पहाड़ी है। यहाँ ज़ोर शोर से खनन कार्य चल रहा है ।

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

इन गुफ़ाओं को रक्षित घोषित नहीं किया हैं । जबकि पुरातत्त्व विभाग ने इन गुफ़ाओं की मुलाक़ात ली थी।

कच्छ की पाटगढ़ की बौद्ध गुफ़ाएँ :

कच्छ के लखपत तहसील में पुराने पाटगढ़ के पास पहाड़ में ये गुफ़ाएँ स्थित हैं । ई.स. 1967 में के. का.शास्त्री ने ये गुफ़ाएँ खोज निकाली थी । यहाँ दो गुफ़ाएँ हैं। स्तंभ का नक्काशी काम सियोत की बौद्ध गुफ़ाओं जैसा हैं । पुरातत्त्व विभाग का मानना है कि यह गुफ़ाएँ दूसरी सदी की हैं। गुफ़ाएँ रक्षित नहीं हैं। गुफ़ाएँ साधारण हैं।

आमोद्रा की बौद्ध गुफ़ा :

आमोद्र ऊना तहसील का गाँव है । ऊना से सात किमी दूर है । गाँव की पश्चिम बाजू नदीतट पर छोटी पहाड़ी पर यह गुफ़ा है । गुफ़ा बड़ी है । आगे बरामदा है । गुफ़ा में अभी भवानी माता का मंदिर बनाया गया है । गुफ़ा के साथ कहानी जोड़ दी गई है। गुफ़ा की रचना और नक्काशी काम बौद्ध गुफ़ा होने की गवाही देती है । यह गुफ़ा बाजू में स्थित लोर, साणा दमासा, फ़रेडा, द्रोण और नंदिवेला में स्थित बौद्ध गुफ़ाओं जैसी हैं। इसमें से एक-दो भिक्षुओं ने यह गुफ़ा बनाई होगी। इस गुफ़ा का समयकाल दूसरी सदी के आसपास का होने क अनुमान है।

गोप बौद्ध विहार :

गोप भाणवड तहसील के बरडा पहाड़ के पास स्थित गाँव है । यहाँ बौद्ध विहार है। गुफ़ा में गोपनाथ का मंदिर बनाया है । पुरातत्त्व विभाग ने इस विहार का पुन:निर्माण किया था।

घुमली मोखाणा की बौद्ध गुफ़ाएँ :

पोरबंदर के पास बरडा पर्वत में बौद्ध गुफ़ाएँ और विहार हैं । जो कंडवाणीजर में भृगुकुंड के पास स्थित है। ई.स. चौथी पाँचवीं सदी की बौद्ध भिक्षुओं द्वारा बनाई गुफ़ाएँ हैं जो मोखाणा गाँव के पास जानुज़र में स्थित है । सामान्य गुफ़ाएँ हैं ।

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

भृगुऋषि के आश्रम के पास विशाल गहरी गुफ़ाएँ थीं। किवदंतियों के मुताबिक़ पर्वत के भीतर राजा का सोने के महल था। जिसको सरकार ने बंद कर के बहार से चुन दिया गया है। वास्तव में वह बौद्ध विहार था।

कनकेश्वर की बौद्ध गुफ़ाएँ :

गिर कनकाई के नाम से प्रसिद्ध स्थान है । कनकाई मंदिर बौद्ध अवशेषों पर खड़ा मंदिर है। विसावदर से 20 किमी दूर गिर मध्य जंगल में है । यहाँ मिले अवशेष बौद्धकालीन हैं। किसी काल में यहाँ बौद्ध भिक्षु निवास करते थे । आसपास के खण्डहर इस बात की प्रतीति कराते हैं।

द्रोण की बौद्ध गुफ़ाएँ :

द्रोण गिर गढ़डा की उत्तर दिशा में मच्छुंदरी के किनारे स्थित है । यहाँ द्रोणेश्वर महादेव का मंदिर है। किसी समय में मच्छुंदरी के किनारे अनेक बौद्ध गुफ़ाएँ थी । विहार थे ऐसा उल्लेख इतिहास के पृष्ठों को टटोलने से मिलते हैं।

चोटिला खापरा कोडिया की बौद्ध गुफ़ाएँ :

ये गुफ़ाएँ चोटिला और थान के बीच बांडिया बेली नामक पहचाने जाने वाले जंगल में है। हल्के लाल रंग के पत्थर की विशाल पहाड़ी में स्थित है । ये बौद्ध गुफ़ाएँ समय चलते चोर-लूटेरे का आश्रयस्थान बनने के कारण उनके नाम से पहचानी जाने लगी हैं। सामान्य गुफ़ा है, परंतु बहार की कड़ी गर्मी को लाल पत्थर सूख लेते है। अत: भीतर शीतलता का अनुभव होता है । यहाँ तेंदुए का बहुत डर रहता है। प्रतिबंधित विस्तार है । यहाँ आने के लिए वन विभाग की पूर्व सम्मति लेनी पड़ती है।

वेजल (कोठो) बौद्ध स्तूप :

तुलसीश्याम से नौ किमी. दूर है । टिंबरवा गाँव से पाँच किमी. गिर जंगल में है । लोग ऐसा मानते हैं कि वेजो तथा सेजो नाम के दो भाई इस कोठा में रहते थे । दोनों लुटेरे थे। उनके नाम से इस कोठा का नाम वेजल कोठो पड़ा है । वास्तव में

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

वह बौद्ध स्तूप था। ऐसा ही कोठो हडमतिया गिर में है । वह वजिरयान कोठो के नाम से प्रसिद्ध है। यह बौद्ध स्तूप रावल नदी के किनारे पर था।

मोतीनग की (ओखा मण्डल) बौद्ध गुफ़ाएँ :

ओखा मण्डल में बौद्ध धर्म का बहुत प्रचार-प्रसार हुआ था। कर्नल टॉड को 1922 में संखोद्वार बेट से भगवान बुद्ध की मूर्ति मिली थी। बेट से एक दूसरी छोटी बुद्ध की मूर्ति मिली थी। उसको स्थानिक लोग लक्ष्मण के नाम से जानते थे । बेट पर का आदीनारायण मंदिर प्राचीन बौद्ध स्तूप पर बनाया हुआ है । इस मंदिर के पास मोतीगर की गुफ़ाओं के नाम से पहचाने जाने वाली बौद्ध गुफ़ाएँ हैं।

विक्रेमेश्वर की बौद्ध गुफ़ाएँ :

प्राची और वेरावल रोड पर विक्रेमेश्वर का बोर्ड आता है। सरस्वती नदी के तट अपर यह बौद्ध गुफ़ा स्थित है। रोड से दक्षिण में है । बिलकुल नदी किनारे है। गुफ़ा में मंदिर बनाया है। बौद्धकालीन स्तंभ का नक्काशिकाम हैं। गुफ़ा की नक्काशी अन्य गुफ़ा जैसी है। यहाँ नदी बहुत गहरी है। आसपास फलों के बगीचें हैं। लोग परिवार के साथ बागान में रहते हैं । गुफ़ा के आँगन में विशाल बौद्ध वृक्ष है । गुफ़ा का बरामदा बड़ा है। यहाँ दो गुफ़ाएँ हैं। गुफ़ा के अंदर-बाहर रंग किया हुआ है।

रामपरा का बौद्ध स्तूप :

रामपरा वेरावल तहसील का गाँव है । गाँव की उत्तर में 80 फुट ऊँचा टीला था । यह टीला ही बौद्ध स्तूप था। लोग उसे भूपतदादा के मंदिर के नाम से जानते हैं । टीले की इर्दगिर्द स्थित गाँव की सतह की जमीन को अंबुजा सीमेन्ट कंपनी ने लिज़ पर रखी है। यहाँ से निकलने वाले चुने के पत्थर का उपयोग सीमेन्ट बनाने के लिए किया जाता है । टीले के अलावा आसपास की जमीन की खुदाई कर के तालाब बनाया गया है । टीला बच गया है । यहाँ के पत्थर पर ब्राह्मी लिपि में लिखावट थी उसको भूपतदादा के मंदिर क ऊपर के भाग में गाड़ दिया गया है। दूर से स्तूप अपनी भव्यता की गवाही देता है।

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

वंथली का बौद्ध स्तूप :

वंथली जूनागढ़ के रा वंश की एक समय की राजधानी थी। रा'खेंगार दूसरे की रानी राणक को प्राप्त करने के लिए पाटनपति सिद्धराज जयसिंह ने 12 वर्ष वंथली में पड़ाव डाला था। इस वंथली की दक्षिण बाजू में कुतियाना दरवाज़ा है । इस दरवाज़े के पास पुराना कब्रस्तान का ऊँचा टीबा है । पुरातत्त्व की दृष्टि से यह टीबा महत्वपूर्ण है। टीबे के ऊपर खुदाई करने बौद्धकालीन मूर्ति के अवशेष मिले थे । यह टीबा किसी समय बौद्ध विहार था। वंथली के बाजू में कनजा गाँव है। इस गाँव की सरहद में कुछ वर्षों पहले बौद्ध की मूर्तियाँ मिली थी।

चोटिला की (हिंगलाज माता) बौद्ध गुफ़ाएँ :

चोटिला की पर्वतमाला जसदन से थान तक फ़ैली हैं । इस पर्वतमाला में स्थित गुफ़ाओं में सात वर्ष से हिंगलाज माता का मंदिर बनाया है । इस मंदिर की पाकिस्तान में स्थित हिंगलाज माता के मंदिर के साथ तुलना की जाती है । दोनों कहानी केवल कल्पना से विशेष नहीं है । यहाँ चार बौद्ध गुफ़ाएँ हैं । उसमें बदलाव किया गया है । मूल गुफ़ाओं में किया गया बदलाव दिखाई देता है । गुफ़ाओं की रचना यहाँ आसपास स्थित अन्य गुफ़ाओं जैसी हैं । अत: ये बौद्ध गुफ़ाएँ हैं । दूर अति दूर मानवरहित विस्तार के बीच अकेले माताजी कैसे रहते होंगे ? यहाँ लेटे हुए माताजी है वह मूलतः भगवान बुद्ध की निर्वाण समय की स्थिति दर्शाती मूर्ति है। जिसको चुनरी ओढ़ाकर बदलाव करके माताजी बनाए हैं । बौद्ध भिक्षुओं के ऐतिहासिक प्रमाण मिलते हैं। जिससे यह साबित होता है कि इस बौद्ध गुफाओं पर मंदिर बनाए गए है और जो हमारी वास्तविकता हैं। अत: यहाँ बौद्ध भिक्षुओं निवास करते थे और ये गुफ़ाएँ बौद्ध गुफ़ाएँ हैं।

ओसम पर्वत और गिरनार की बौद्ध गुफ़ाएँ :

गिरनार की दक्षिण दिशा में डूंगरपुर गाँव और गिरनार के बीच बड़ी मात्रा में बौद्ध गुफ़ाएँ थीं। जो समग्र गुफ़ाएँ पत्थर की खाई में नष्ट हो चुकी हैं । पाटनवाडा में स्थित ओसम पहाड़ में बौद्ध गुफ़ाएँ हैं।

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

अत्त दीपो भव ।

विशेष :

दक्षिण गुजरात के डांग ज़िले के गांवों के से किए साक्षात्कार से मिली जानकारी के अनुसार यह लेख तैयार किया गया है अत: इसमें सन्दर्भ नहीं दिए गए है।

www.ijahms.com